Yayawari
via bhojpuri
घासवाली
प्रेमचन्द
आवाज
असिमा भट्ट
अनुवादक
अनुराग रंजन

घासवाली

कहानी

लेखक- प्रेमचंद

अनुवादक- अनुराग रंजन

“ईश्वर बृज” फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2023

1

मूलिया हरियर-हरयर घास के गठरी लेके आइल, तऽ ओकर गेहूँआ रंग तनि खिसी लाल हो गइल रहे आ बड़-बड़ मदहोश करे आला आंखिन में सक समाइल रहे। महावीर ओकर लाल चेहरा देखके पूछलस- का हऽ मूलिया, आज कइसन जी बा।

मूलिया कवनो जबाब तऽ ना देलस- ओकर आँख डबडबा गइल !

महावीर ओकरा लगे आ के पूछलस- का भइल बा, बतावत काहे नइखू ? केहु कुछो कहले बा, आमा डंटले बाड़ी, काहे एतना उदास बारू?

मूलिया सिसक के कहलस- कुछु तऽ ना, भइल का बा, निमन तऽ बानी ?

महावीर मूलिया के माथ से गोड़ तक निहार के कहलस- चुपचाप रोवबू, बतइबु ना?

मूलिया बात टार के कहलस- कवनो बात होखहु के चाहीं, का बताई।

मूलिया एह ऊसर में गुलाब के फूल रहे। गेहूँआ रंग रहे, हिरन अस आँख रहे, नीचा कावर खिंचल ठोड़ी। गाल पऽ हलुक लाली, बड़ बड़ नोख पपनी, आंखिन में एगो अलगे तरे के पानी, जवना में एगो साफ दरद, एगो बिना कहल दुख झलकत रहे। पाता ना, चमारन के एह घर में ऊ अप्सरा कहवाँ से आ गइल रहे। का ओकर मुलायम